Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર
SHRUTSAGAR (MONTHLY)

March-2022, Volume : 08, Issue : 10, Annual Subscription Rs. 150/- Price per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

दीपसूर संवाद

प्रकाश के पूंज सूर्य एवं दीपक के
बीच हो रहे कवि कल्पना के
संवाद का एक प्रतिक चित्र
(विवरण हेतु देखे पत्रांक-११)

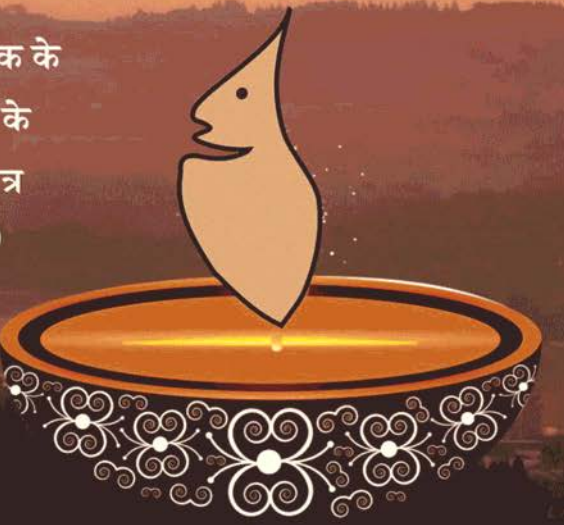

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

कैलासवाटिका कोबाधाम में नवनिर्मित जिनालय में जिनबिंब प्रवेश प्रसंग की झलकियाँ (आगामी प्रतिष्ठा दिन 25 अप्रैल 2022)

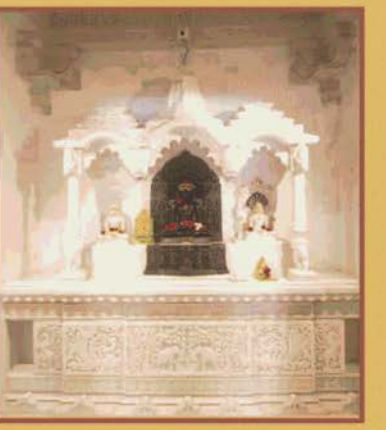

महुडीतीर्थ में भव्यातिभव्य दीक्षा महोत्सव के नयनरम्य दृश्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-८, अंक-१०, कुल अंक-९४, मार्च-२०२२

Year-8, Issue-10, Total Issue-94, March-2022

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖ हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖ राहुल आर. त्रिवेदी

❖ संपादन निर्देशक ❖ गजेन्द्रभाई शाह

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ मार्च, २०२२, वि. सं. २०७८, फाल्गुन शुक्ल द्वादशी

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. ७५७५००१०८१, ७५७५००१०८२, ७५७५००१०८४,

७५७५००१०८५, वॉट्स-एप ७५७५००१०८१

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	श्री गजेन्द्र शाह	५
२.	श्रुतप्रेमी दाताओं की सूची	-	७
३.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	८
४.	Awakening	AcharyaPadmasagarsuri	९
५.	दीप-सूर संवाद	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	१०
६.	बलुंदातीर्थमंडन श्री शांतिनाथजी स्तवन	राहुल आर. त्रिवेदी	२१
७.	आगम प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज - अपूर्व श्रुतभक्ति अने अदम्य ज्ञानपिपासा	डॉ. कुमारपाळ देसाई	२५
८.	लखनौ म्युझीयमनी जैन मूर्तिओ	मुनिराज श्री न्यायविजयजी	२८
९.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमन्त कुमार	३०
१०.	समाचार सार		३३

ज्युं औषध अंजन किजीई, तिमरपडल मट जाये।
तिउ सदगरु उपदेस से, संसे वेग विलाए ॥१८॥

प्रत- १३५०४८

भावार्थ- जिस प्रकार औषध का अंजन करने से आंखों पर रहा अंधकारपटल दूर हो जाता है, वैसे ही सदुरु के उपदेश से संशय शीघ्र ही मिट जाते हैं।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

गजेन्द्र शाह

प्रस्तुत अंक में लेख- १. गुरुवाणी, २. Awakening, ३. दीप-सूर संवाद (अप्रगट कृति), ४. बलुंदातीर्थमंडन श्री शांतिनाथजी स्तवन (अप्रगट कृति), ५. आगम प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज - अपूर्व श्रुतभक्ति अने अदम्य ज्ञानपिपासा, ६. लखनौ म्युझीयमनी जैन मूर्तिओ, ७. श्रीमद् देवचंद्रजी कृत चौबीसी (पुस्तक समीक्षा) ये ७ लेख प्रकाशित किये गये हैं। इनमें २ अप्रगट कृतियाँ प्रकाशित की गई हैं।

१. गुरुवाणी- योगनिष्ठ प. पू. आ. श्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पुस्तक "धार्मिक गद्य संग्रह भा.१" में से यहाँ एक पत्र प्रकाशित किया गया है। उनकी पुस्तक में सभी पत्रों में शीर्षक हो ही ऐसा जरूरी नहीं है, लेकिन हम जिस पत्र को या पत्रांश को लेते हैं, उसका विषयानुरूप योग्य शीर्षक दे देते हैं। प्रस्तुत अंक में दिये गये पत्र का नाम हमने "अध्यात्म गंगा" रखा है। इसमें योगनिष्ठश्री ने अध्यात्म की महत्ता का भरपुर वर्णन किया है। अध्यात्म को गंगा की उपमा दी है और कहा कि जिनके हृदय में यह गंगा बहती है, उनमें पापमल रह नहीं सकते। अध्यात्म को सूर्य की भी उपमा दी है। इस सूर्य के उदय से अहं व ममत्व के बरफीले पहाड़ पिघल जाते हैं। अध्यात्म की क्या आवश्यकता है व क्या प्रभाव है, उसका सुंदर निरूपण इस पत्र में प्राप्त होता है।

२. Awakening- राष्ट्रसंत प. पू. आ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. के पावन प्रवचन की पुस्तक **Awakening** से क्रमशः प्रकाशित इस लेख में उदाहरणों के साथ भली-बूरी संगत की बात दर्शाई गई है। मन को मोम की उपमा दी है, मोम को जिस प्रकार अपेक्षित आकार दिया जा सकता है, वैसे मन को भी संग के प्रभाव से भला-बूरा विकार प्राप्त होता है। उसके अलावा पूज्यश्री ने दृष्टांतों में अभिनय हेतु पहने साधुवस्त्रों के संसर्ग का प्रभाव, साधु संग से नयसार को तीर्थंकरत्व की प्राप्ति, हीरसूरि के संग से अकबर व हेमचंद्रसूरि के संग से कुमारपाल के जीवन परिवर्तन आदि की बातें बहुत ही सरल भाषा में समझाने का प्रयास किया है।

३. दीप-सूर संवाद- मुनि लावण्यसमय रचित एवं पू. गणिवर्य श्री सुयश-सुजशचंद्रविजयजी म.सा. द्वारा संपादित इस अप्रगट कृति में लावण्यसमय द्वारा दीप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की महत्ता व मुनि भावकळश द्वारा सूर्य की महत्ता के बारे में हुए संवाद का विवरण दिया गया है। कृति रोचक व ध्यानाकर्षक है।

४. बलुंदातीर्थमंडन श्री शांतिनाथजी स्तवन- राजस्थान के प्रायः अप्रचलित स्थान बलुंदा के तीर्थपति श्री शांतिनाथजी भगवान का कविवर श्री कनकसागर कृत प्रायः अप्रगट स्तवन को इस अंक में प्रकाशित किया गया है। इस तीर्थ की वर्तमान स्थिति क्या है, उसका हमें कोई परिचय नहीं है, लेकिन रचना वि. सं. १७७८ की है तो यह तीर्थ उससे भी काफी पुराना होगा, उसका अनुमान लगाया जा सकता है। इस कृति में भगवान के जन्म प्रसंग से लेकर चक्रवर्ती पद, दीक्षा व संपदा आदि के वर्णना के साथ भाववाही स्तवना की गई है। इस कृति का संपादन आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा के पंडित श्री राहुलभाई त्रिवेदी द्वारा किया गया है।

५. आगम प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज- अपूर्व श्रुतभक्ति अने अदम्य ज्ञानपिपासा- डॉ. कुमारपाळ देसाई द्वारा लिखित लेख प्रकाशित किया गया है। इसमें आगमप्रभाकर पू. मुनि श्री पुण्यविजयजी म. की श्रुतभक्ति के विषय में हृदयस्पर्शी विवरण प्रस्तुत किया गया है। ज्ञान के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान देने वाले पू. पूण्यविजयजी की कुछेक विशेषताओं का गान हो एवं वाचक लाभान्वित हो, इस हेतु इस लेख का प्रकाशन किया गया है।

६. लखनौ म्युझीयमनी जैन मूर्तिओ- "जैन सत्य प्रकाश" मेगेजिन में से मुनिराज श्री न्यायविजयजी लिखित लेख साभार प्रकाशित किया गया है। लेख के शीर्षक से ही पता चल जाता है कि इसमें क्या है। आज की अपेक्षा ८५ वर्ष पूर्व मथुरा की जैन प्रतिमा, लखनौ के म्युझीयम की क्या स्थिति थी उसकी रोचक माहिती इस लेख से प्राप्त होती है।

७. श्रीमद् देवचंद्रजी कृत चौबीसी- श्री प्रेमलभाई कापडिया द्वारा संपादित इस पुस्तक के साथ मूल, गुजराती एवं हिन्दी अनुवाद, प्राचीन दुर्लभ चित्रों आदि सह किस प्रकार साजसज्जा से व वाचक उपयोगिता से प्रकाशन किया गया है, उसका सुव्यवस्थित वर्णन कोबा ज्ञानमंदिर के ग्रंथपाल डॉ. हेमंतजी द्वारा दर्शाया हैं।

अंक में प्रकाशित उपरोक्त लेख सामग्री वाचकों के लिए उपयोगी बने, वाचकवर्ग हमें अपने सुझावों से अवगत करावें इसी मंगल कामना के साथ...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतप्रेमी दाताओं की अनुमोदना

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सकल जैनसंघ का गौरवस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

सदुपदेशक : प्राचीन श्रुत-तीर्थोद्धारक, राष्ट्रसंत

पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

श्रुतप्रेमी दाताओं की नामावली

- जैन समाज मान्चेस्टर, मान्चेस्टर, यु.के.
- जैन सोसायटी ओफ ग्रेटर क्लीवलेन्ड, यु.एस.ए.
- श्री वासुपूज्य स्वामी जैन श्वे.मू.पू.संघ, अक्कीपेट, बेंग्लोर.
- श्री महावीर श्वे.मू.पू.जैन संघ, विजयनगर, नारणपुरा, अमदावाद.
- श्री राजेश सुमनलाल संघवी, मुंबई.
- श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जैन श्वे.मू.पू.आराधक संघ, विजयपुर, कर्नाटक.
- श्री निरवभाई प्रदिपभाई मरचन्ट, अमदावाद.
- श्री तेजस प्रदिपभाई मरचन्ट, अमदावाद.
- श्री प्रदिपकुमार जयंतिलाल मरचन्ट, अमदावाद.
- श्री प्रो.मनीषभाई जैन, आई.आई.टी., पालज, गांधीनगर.

धन्यवाद... अनुमोदना... अभिनंदन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

अध्यात्म गंगा

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी म.सा.

संवत् १९६८ चैत्र वदि ११ शनिवार. ता. १३-४-१२ वडोदरा.

धर्मनो मूळपायो अध्यात्मज्ञान छे। अध्यात्मज्ञानने शिखरे चढेला मनुष्यो नित्य सुखमां सदाकाळ मग्न रहे छे। शुष्कता आनन्द रहित रसमय एवुं अध्यात्मज्ञान जेओने प्राप्त थाय छे। तेओनी मानसिक सृष्टि खरेखर शुक्ललेश्याना योगे स्फटिकरत्नसमान निर्मल बने छे। अध्यात्मज्ञानमां परिणमवाथी मनमांथी कृष्णादिलेश्याओ टळी जाय छे।

जेने अध्यात्मज्ञान प्राप्त थएलुं होय छे ते आत्मानी सृष्टिनो विलासी बने छे। देवताओना विहार करतां तेनो विहार बहु आनन्दमय होय छे। मूळ अध्यात्म ज्ञानने प्राप्त करवाथी सर्व प्रकारना दोषो टाळवानी बुद्धि प्रकटी शके छे। आत्मानी श्रद्धा अने आत्मानी शक्तियो खीलववानुं कार्य जेओ करे छे तेओ सर्व मनुष्यो वा सर्व जीवोना हृदयमां प्रवेश करीने सर्व जीवोने पोताना हृदयनी पासे लावीने महान् लाभ आपे छे।

अध्यात्मज्ञाननी परिणति रूप गंगा नदी खरेखर जेओना हृदयमां वहे छे तेओनामां पापरूप मेल रही शके नहि। अध्यात्मरसनी शीतलता खरेखर आन्तरिक सर्व पापोने हरवा माटे समर्थ थाय छे। आखी दुनीयामां अध्यात्मज्ञानना विचारो फेलववाथी मनुष्यो आत्मिक आनन्द सन्मुख गमन करवा शक्तिमान् थाय छे।

अध्यात्मज्ञान रूप सूर्यकिरणोथी अहं ममत्वरूप बरफना पहाडो क्षण मात्रमां ओगळी जाय छे। अने आत्मारूप आकाशमां शोक चिंताओनां वादळां पण रही शकतां नथी। नित्य ज्ञानप्रकाशना उदयवाळो आत्मा छे। आत्मानुं ज्ञान करीने आत्मधर्ममां परिणमवाथी आत्मानो आनन्दरस प्रकट्या विना रहेतो नथी। दुनियामां मरजीवा थइने आत्माना आनन्दरसनुं पान करीने आत्मभावे जीववुं जोइए।

आत्माना आनन्दरसनुं पान करनाराओ जे कंइ करे छे, बोले छे तेमां साध्यशून्यदृष्टि होती नथी। आत्माने आत्मरूपे जाणवाथी सहजानन्द रस प्राप्त करी शके छे। अनेक महात्माओए पाताळी कूवानी सेरोना जेवो इन्द्रियातीत आत्मानंद प्राप्त कर्यो। वर्तमानमां पण ते अमुक अंशे प्राप्त थाय छे। आध्यात्मज्ञानथी, परमात्माना जेवुं नित्य सुख आस्वादी शकाय छे अने तेवुं सुख खरेखर आत्मामां छे। त्यारे हवे तेने माटे बहार केम फांफां मारवां जोइए। अलबत ! फांफां न मारवां जोइए।

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ –२७०-२७१

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

The human mind soars upwards; flies to lofty heights; otherwise, that is in the absence of such an influence, the human mind goes downwards.

The mind is like wax. It is shaped and disciplined by the mold of Shastra Shravan (listening to discourses). On account of the impact of such discourses, it moves away from sensual enjoyments towards renunciation and spiritual elevation.

Uda Mehtha achieved spiritual purity by listening to the discourses of Tharagal, who was in the guise of an ascetic. The disguise of an ascetic had a deep impact on Tharagal himself. It impelled him to give up his lust for wealth. The life of Nayasar became transformed on account of the impact of the company of saintly persons. Later, he attained the level of a Thirthankara. Akbar became a lover of nonviolence on account of his meeting with Vijayahira Soorishwar. Under the influence of Acharya Hemachandra Soori, king Kumarpal attained paramaarahatha (the highest level of spiritual elevation).

There is a proverb: "Our minds are shaped by the food we eat". As a contrast to the man who eats meat, the man who eats vegetarian food entertains noble thoughts. If a person eats unholy food, his thoughts and actions will also be unholy.

(continue)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लावण्यसमय मुनि कृत

दीप-सूर संवाद

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

मानव मात्र पोताना विचारने रजू करवा शब्दनो सहारो ले छे। अने पछी ते ज विचारने प्रस्थापित करवा चर्चानो आशरो स्वीकारे छे। आ चर्चानुं बीजु नाम ज वाद।

पूर्वना काळमां बुद्धिजीवीओ वच्चे स्वमत स्थापनानी माटे आवी वादसभाओ योजाती। भर सभामां, राजाओनी-विद्वानोनी-नगरजनोनी समक्ष प्रतिपक्षीने परास्त करवामां मोटाई गणाती। तेनी जीतना मान-मरतबा पण मोटा मळता। अरे एतो ठीक परंतु वाद हारी जनारनी सर्व संपत्तिना हरणथी लई देशनिकालना दंड सुधीनी शरतो पण तेमां मूकाती।

जो के समय जतां तेवां वादो तो मात्र 'साप गया ने लीसोटा रह्या' ए न्याये औपचारिकता पाम्या। एटले के ते वादो मात्रने मात्र मनोरंजनना साधन तरीके के विद्वत्ता- प्रदर्शनना स्थान तरीके ज प्रसिद्धि पाम्या। तेमां'य वर्तमान काळे तो तेवा'य वाद करनारा नथी के नथी तेवा वाद समजनारा.. अस्तु।

उपरोक्त वात अहीं एटला माटे करी छे कारण के अत्रे संपादित करायेल कृति ते ज विषयवस्तुने केंद्रमां राखी रचायेली पद्य रचना छे। तेमां एक पक्षे मुनि भावकळशे सूर्यनी महत्ता दर्शाववानो प्रयत्न कर्यो छे, तो बीजा पक्षे कवि लावण्यसमये दीवानी मुख्यता स्थापवानो पुरुषार्थ कर्यो छे। जो के अहीं वादी-प्रतिवादी बन्ने'य मुनिओनी स्वमत स्थापनानी दलीलो एटली बधी सुंदर छे के घडीक आपणे'य ते बन्ने'यना मतप्रवाहमां तणाई जईए।

अहीं वादनी वात करता पूर्वे आपणे वादनी शरूवात कई रीते थइ तेनी तथा वादजय अंगेनी वात थोडी जाणी लईए। संवादना १० मां पद्यमां कविए ज नोंध्या मुजब वादनी शरूआत मुनि भावकळशे करी। सौ प्रथम तेमणे सूर्यनी महत्ता दर्शावतुं (१ चरणथी अपूर्ण) १ पद्य लखी कवि लावण्यसमयने मोकल्युं। जेना प्रत्युत्तरमां कविए २ पद्योमां दीपकनी महत्ता दर्शावी मुनि भावकळशने मोकली। वळी मुनि भावकळशे सूर्यनी मुख्यता स्थापित करता २ पद्यो कवि लावण्यसमय पर मोकली वाद आगळ वधार्यो। तो कवि लावण्यसमये तेना जवाब रूपे प्रस्तुत संवादनी रचना करी तेना अंतमां दीपकनी सर्वोपरिता दर्शावी स्वमतनी स्थापना सिद्ध करी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृति परिचय

प्रस्तुत कृति छप्पय छंदमां रचायेली कुल ३० गाथानी लघु कृति छे। कृतिना शब्दो कांईक अंशे अघरा छे। ते छता कविनी शैली (शब्दकोशना माध्यमे) कृतिने समजवा माटे सांकळ रूप थई शके तेवी छे। काव्यना प्रासो, विशिष्ट शब्दप्रयोगो कृतिनी सुंदरतामां वधारो करे छे। तेमां'य खास करी दह दिसि....(पद्य१२/चरण-३) कल्पवृक्ष..... (पद्य २२/चरण-२), जेवा पद्योमां देखाती द, त विगेरे अक्षरोनी पुनरुक्ति विशेष ध्यान खेंचे छे। जो के अमने पण कृतिना दरेक पद्यो साव स्पष्ट ज थया छे तेवुं नथी। थोडां पद्योमां तो अमने'य प्रश्न छे। जेना समाधान माटेना प्रयत्नो अमारा पण शरू छे।

कृतिकार परिचय

पिता श्रीधर-माता झमकलना पुत्र तेओ तपागच्छीय प.पू.आ. श्रीसोमसुंदरसूरि म.सा. नी परंपरामां आ. श्री लक्ष्मीसागरसूरिजीना शिष्य समयरत्नना शिष्य हता। तेमनुं गृहस्थपणानुं नाम लघुराज हतुं। सं. १५२९ मां तेमणे लक्ष्मीसागरसूरिजी पासे दीक्षा स्वीकारी समयरत्नसूरि पासे विद्याध्ययन कर्युं। अनुक्रमे सं. १५५५ मां गुरुभगवंते तेमने पंडितपद आप्युं।

लघु वयमां दीक्षित थयेला तेमणे घणा ग्रंथोनी रचना करी। तेमां'य विषयवस्तुने आवरीने टूंकी, रसाळ तथा अलंकारिक रचनाओ करवामां तेमनुं विशेष प्रभुत्व हतुं। तेमणे रचेल विमलप्रबंध रास, खीमा-बलिभद्र तथा यशोभद्र ऋषि रास-रंगरत्नाकर (नेमिजिन) रास विगेरे काव्योमां आपणने तेमनी ते शैलीनो परिचय जोवा मळे छे। तेमणे उपरोक्त ग्रंथो सिवाय अन्य पण लुंपकवदनचपेट चोपाई, गौतमपृच्छा चोपाई जेवा सैद्धांतिक ग्रंथो, सुमतिसाधुसूरि विवाहलो, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ छंद जेवा ऐतिहासिक ग्रंथो, स्थूलिभद्र एकवीसो, वच्छराज चौपाई जेवा चारित्रात्मक ग्रंथो, चंपक-चंदन संवाद, रावण-मंदोदरी संवाद जेवा उपदेशात्मक ग्रंथो तथा चतुर्विंशतिजिन स्तवन, आदिनाथ विनति जेवा स्तवना परक घणा ग्रंथोनी रचनाओ करी छे। जेमांनी घणी रचनाओ तो हजु'य अप्रगट छे।

हस्तप्रत परिचय

प्रस्तुत कृति सूर्य-दीप संवादनी सं. १५६२ मां वामज गामे लखायेली एक मात्र प्रत छे। कृतिनी रचना संबंधि विगत जोता कृतिनी रचना पण वामज गामे ज थई

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होई प्रस्तुत हस्तप्रत कृतिनी प्रायः प्रथमादर्श नकल होवानुं वधु समजाय छे। जो कदाच तेम होय तो कृति कां'तो कर्ताद्वारा के कर्ताना शिष्य परिवारद्वारा ज रचनावर्षे ज लखाई हशे। वळी कृतिनुं आलेखन पण महत्तम अंशे शुद्ध थयुं होई कृति विषेनुं उपरोक्त अनुमान वधु द्रढ थाय छे। जो के लावण्यसमयना के तेमनी परंपराना साधुना अक्षरो साथे आ प्रतनुं मिलान करता आपणी वात वधु स्पष्ट थाय।

खास तो संपादनार्थे प्रस्तुत कृतिनी हस्तप्रत नकल आपवा बदल राधनपुर श्रीलावण्यविजय ज्ञानभंडारना व्यवस्थापकोनो खूब खूब आभार।

दीप-सूर संवाद (अ)

दीप भलउ संसारि देखि तुं दिनकर पाहे[१],
शकुनि[२] लीइ सहू कोइ अवर गुण मोटामाहे।
तप तप तपतु तेज वाद दिनकरसिउं लागु(गउ),
हारिउं नासी गयउ सूर संध्याइं भागउ।
घर-घरिइं हट्ट-पट्टण-पुरिहिं, जसु कंति रयणि झलका[र] करइ,
लावण्यसमय मुनिवर भणइ, ते दीपतणी तुडि[३] कुण करइ ॥१॥

दीपतणूं तां तेज जां पवन न वायइ[४],
दीपतणूं [तां] तेज जां तेलि सींचाइ।
दीप भलउ पणि होइ नैव जवहर[५] परखाइ[६],
दीपतणइ उद्योति श्वान एकू नवि घाइ[७]।
आहुति न पहुचइ देवता, मुनि **लावण्यसमय** तुह्मे सुणउ,
सहस्रकिरणथी अधिक कीउ[८], केहु[९] गुण दीवातणु(णउ) ॥२॥

सुणउ जि(जी?) मुनि **लावण्य** वात पणि खरी अह्मारी,
करी कुटुंबाचारि[१०] हृदय नवि जोयूं विचारी।
तुह्मे आणिउ अहंकार पार मइं ताहरु जाणिउ,
वख्(क्)खोडिउ[११] श्रीसूर दीप तुह्मे भलउ वखाणिउ।
घणूं कथन कहीइ किसिउं, चित्ति मत्ति(ति?) तुह्म नवि वसी,
एक बोल बोलूं अह्मे, दीपक दिणयर तुडि किसी ॥३॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीपतणइ जो ठामि दीप अह्मे भलउ वखाणुं,
तुह्मे कही जे वात तेह हूं हईसु[१२] जाणुं।
मंगलदीवउ होइ प्रगट आरती सु कीजइ,
जिहां हुइ अंधकार दीप सही तिहां धरीजइ।
कहि **भाव** आणंदिसिउं, मुनि **लावण्यसमय** सुणे,
दिणयर न उग्गइ विश्वमाहि, तब किं किज्जइ दीवे घणे ॥४॥

चीनाबोडीमाहि[१३] गुण नवि लहिआं सीगाली[१४],
विवरि[१५] नहीं गोह[१६] नाग[१७] हुइ केणि[१८] दरि काली।
तुह्मे बोलिउ जे बोल सही ते जाणे कूडउ[१९],
पूछे जाण अजाण भुवनि त्रिहुं दिनकर रूडउ।
उग्गमइ[२०] भाण दीवातणूं तेज न दीपइ बप्पडी[२१],
सूर विना **लावण्यसमय** नवि चालइ इक्कइ घडी[२२] ॥५॥

दीप-सूर संवाद (ब)

सकल श्वेत शिणगार भगत भावठि[२३] भयहरणी,
कमल कमंडल कि(क?)मल[२४] वेणु[२५] पुस्तक करि धरणी।
वाहनि हंस विशेष वंश ब्रह्मा दीपंति,
सुर नर प्रणमइ हेजि[२६] तेजि त्रिभुवन जीपंति[२७]।
दीप सूर संवाद धुरि[२८], जव माता तुं मनि धरी,
लावण्यसमय मुनिवर भणइ, तव जयपताक[२९] जाणे वरी ॥१॥

आठ-पगारी[३०] पूजि देवि दीवा विणु नुहइ[३१],
मंगल काज अनेक सोइ[३२] विण दीप न सोहइ।
पर्व पजूसणमाहि दीप जु जमलि[३३] मंडाइ[३४],
पूछउ माहजन-लोक दीप ते किम छंडाइ[३५]।
सुणि **भाव** दीप जु नवि गमइ, **लावण्यसमय** कहइ भाखडी[३६],
आरती दीप मंगल हुतां, रहु जमला[३७] तु आखडी[३८] ॥२॥

अवर अगोचर ठामि दीप हुइ घण मीठा,
पर्व दीवालीमाहि किसिउं[३९] तइं दीप न दीठा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संध्या दीठउ दीप प्रथम सहू कोइ जुहारइ[४०],
देवतणइ प्रासादि राति दिन ओलग[४१] सारइ।
लावण्यसमय मुनिवर भणइ, घरि हाटि नगरि पाटणि करइ,
जगदीश्वरि दीवउ मानीउ, ते कहिन **भाव** तइं किम वरइ[४२] ॥३॥

पवनिइं वाधइ[४३] दीप सूर राहूइं न गलीउ[४४],
पवनिइं वाधइ दीप सूर आभले[४५] न छलीउ[४६]।
तेलिइं[४७] दीपइ दीप सूर तिम दिन विण दीपइ,
दीप रहइ राखीउ[४८] सूर चिहुं पहुरे छीपइ[४९]।
लावण्यसमय मुनिवर भणइ, प्रगटइ दीधइ सादडइ[५०],
भूमंडलि भो **भाव** सुणि, थूंक-सोस[५१] इणि वादडइ[५२] ॥४॥

कुलदीपक जे होइ सोइ धुरि वाद न मंडइ[५३],
कुलदीपक जे होइ सोइ मंडिउ नवि छंडइ।
कुलदीपक जे होइ सोइ विद्यागुण जाणइ,
कुलदीपक जे होइ किम आप वखाणइ।
अक्षरवट[५४] सवि ओलखइ, कहि **लावण्यसमय** सही,
सुणि भाव अछइ संदेह मझ[५५], तूं सिउं कुलदीपक नही ॥५॥

पर्व पजूसणमाहि काम तइं कूडूं मांडिउं,
करी कवित्त मोकलिउं माहि पद चउथूं छांडिउं[५६]।
अवर लेख मोकलिउं सोइ वांची मनि आणिउ[५७],
ते लिखवानइं मेलि[५८] पाड[५९] डाहपणनु जाणिउ।
जु लिखतां नवि आवडइ, वेध[६०] विशेष न जाणीइ।
लावण्यसमय कहइ **भाव** सुणि, तु गहिला[६१] गर्व न आणीइ ॥६॥

जे तइं गुण पूछीआ देखि दीपकना ताजा,
ते तइं नवि प्रीछीआ[६२] दीपना नवल[६३] दिवाजा[६४]।
कहुं हजी सांभलउ देह तुह्म जु हुइ साजा,
सूर अछइ संसारि पहुर[६५] चिहुं केरु राजा।
कहि दीपक दिनकर प्रतिइं, हुं आठ पहुरनुं राजीउ।
लावण्यसमय कहइ **भाव** सुणि, वली तिणि गुणि अधिकु गाजीउ ॥७॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रहि[६६] ऊगमि[६७] अवतार दीप दिनकर भणिज्जइ,
जेहसिउं[६८] जेहवा कांम ताम लोके बहु किज्जइ।
दीपक देई साखि[६९] देव देहरासरि नमीइ,
भोजनि कूर[७०] कपूर भाण[७१] अजुआलइ जिमीइ।
लावण्यसमय कहइ **भाव** सुणि, जु रहइ तु राखउ[७२] किमइ।
तपइ तेज दीपकतणूं, जो जाइ सूर संध्या समइ ॥८॥

कवण दीप? कुण सूर? कवण तूं? किहांथी आयउ?,
कवण गउर(गुरु)? कुण गच्छ? कवण ज[ण]णी तूं जायउ?।
कवण पिता? कुण अह्मे? कवण तुझ ज्ञाति न जाणूं?,
कवण देस? कुण गाम? कवण विज्ञान वखाणुं।
लावण्यसमय भणइ **भाव** सुणि, ए ऊखाणा साचा हुआ,
को कहिनइं नवि ओलखतु, आवउ जन थईइ जुआ ॥९॥

कवित्त लखिउं तइं एक सोइ पुण पाए[७३] खोडुं[७४],
अह्मे लिख्यां ते त्रिणि कहिन[७५] किम कहीइ थोडुं।
तइं लिखीआं वलि दोइ जोइ छ आव्यां वलतां,
हीइ विमासउ वच्छ[७६] वाद मांड्या अणमिलतां[७७]।
लावण्यसमय कहइ **भाव** मुनि, म म बोलउ मच्छरि[७८] चड्या,
तुह्मे न जित्तउ वादडउ, जु धउ(धु)र लगइ ओछा पड्या ॥१०॥

दीपः कथयति ॥

मझसिउं मंडिउ वाद कहिन तइं किसिइं[७९] पराणिइं[८०],
एक चक्र रथ नूर[८१] सूर सिरि चडिउ सिराणिइं[८२]।
तुरिअ[८३]-सत्त[८४]-रथि जुत्त[८५] रासि[८६] पन्नग पोढेरु[८७],
पंथि पंगु सारथी राहु वयरी अधिकेरु।
ऋद्धि न जाणइ ताहरी, तेहसिउं तूं संवाद करि,
लावण्यसमय मुखि दीप कहि, रे भाण जाण म म माण(न?) धरी ॥११॥

मझ समवडि[८८] सवि पुत्त[८९] कोइ नहीं करमिइं[९०] पडतु,
कोडितणां बइसणां[९१] एक इक पाहिं[९२] चडतु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दह दिसि दीपइ तेज देखि दह दिसि हुं जाउं,
मोटिम[९३] महीअलि मज्झि सुखिइं सउडिमा[९४] समाऊं।
लावण्यसमय मुखि दीप कहि, म करु रवि गाढिम[९५] घणी,
चालीइ प्रगट पश्चिमथिकउ[९६] तु, एकवार पूरव भणी ॥१२॥

न रहइ इक्कइ ठामि त्रास विण कां तुं त्रासइ,
सूर धरिउं तइं नाम मन्नि तूं कां न विमासइ।
आवइ अणतेडीउ जोइ नवि जाइ हकारिउ[९७],
ए तुझ सहज सभाव धरणि कहि किणि धूतारिउ[९८],
जे जातु नवि जागवइ[९९], अणतेडिउ[१००] आवइ घणूं,
लावण्यसमय मुखि दीप कहि, तसु नाम आम हिव सिउं भणूं ॥१३॥

हृदय विमासु वच्छ वाद विद्यारसि मंडउ,
जई पूछउ गुरु पासि मूलि मूरखमति छंडउ।
वेग विहूणउ[१०१] तुरी लाछि[१०२] हीणउ लक्ष्मीधर,
गोरस[१०३] जिम घृत-हीण नीर विण जिसिउं सरोवर।
सुणि **भाव** सभाविइं[१०४] वत्तडी[१०५], कहि **लावण्यसमय** इसिउं,
दीपक गुण विण उग्गमइ तु, भाण भलइ कीजइ किसिउं ॥१४॥

भोला भूलउ काइं जोइ ज्योतिषनी वाणी,
वरसिइं बारइ मास होइ दिन रत्ति[१०६] समाणी।
घडी रही पाधरी[१०७] मासनी वात मंडाणी,
सूर विना संसारि, वस्तु कहु सी सीदाणी[१०८]।
खोटि[१०९] वृद्धि[११०] सिरखी सदा, **भावकलस** सुणि कप्पडी[१११],
लावण्यसमय कहइ किम कहिउं, तइं रवि विण न सरइ चप्पडी ॥१६(१५)॥

रयणी दीपक चंद दिवस दीपक जो दिणयर,
कामिणी दीपक कंत देस दीपक राजेश्वर।
त्रिभुवन दीपक दान यान[११२] दीपक गुरु भणीइ,
दीपक वंश सुप(पु?)त्त विनय गुण दीपक सुणीइ।
दीपक दिनकर देखि करि, अणप्रीछिइं कां तडफडउ,
लावण्यसमय कहइ सूरथी, जो दीपक-गुण दीपइ वडु(डउ) ॥१७(१६)॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शर्वरी दीपकश्चन्द्रः, प्रभाते रवि दीपकः ।
त्रैलोक्यदीपको धर्मः, सुपुत्रो कुलदीपकः ॥१॥

'एते सर्वे दीपका एव' इति ग्यायात् दीपकस्य प्रधानत्वम् ।

कर उब्भवि[११३] कवि कहइ देखि दीपक इम जंपइ,
सूर सबल तु जाणि सीम जउ मोरी चंपइ[११४] ।
हुं रयणीनुं राउ[११५] भोग लेऊं दिन केरु,
विदुर[११६] विचारी जोइ कवण बिहुमाहि भलेरु ।
दीपक गुण विण जु तपइ, सूर सबल तु जाणीइ,
कहि दीप न हारूं इणि कलिइं, **लावण्यसमय**ची वाणीइ ॥१८(१७)॥

दीप भलउ संसारि देखि तुं दिनकर पाहे,
शकुनि लीइ सहु कोइ अवर गुण मोटामाहे ।
तप तप तपतु तेज वाद दिनकरसिउं लागउ,
हारिउं नासी गयउ सूर संध्याइं भागउ ।
घर-घरिइं हट्ट-पट्टण-पूरिइं, जसु कंति रयणि झलका[र] करइ,
लावण्यसमय मुनिवर भणइ, ते दीपतणी तुडि कुण करइ ॥१९(१८)॥

दीपक-सूरसंवादे सूरस्तावत् सन्ध्यायां भग्नः ।
अतः कारणात् सन्ध्या यावत् सूरसत्कानि सर्वाणि कार्याणि क्रियन्ते ।

सूर चडिउ तुझ हाथि करमि केलवी[११७] न जाणिउ,
दीप चडिउ अह्म हाथि सोइ गुणि अधिक वखाणिउ ।
दीप सूर नहीं दोस दोस कविजन-मति केरु,
बुद्धि विहूणउ वाद नाद मनि धरइ नवेरु ।
जास पक्ष जे आदरइ, तसु गुण जु लख परि लहइ,
लावण्यसमय मुनिवर भणइ, कवि हारि न को हसतां कहइ ॥१९॥

फणगर[११८] तां फूफूइ[११९] जाम मुखि गरुडि न ग्रहीउ,
त्रंबक[१२०] तां तिगतिगइ जमलि जां नवि सोनईउ[१२१] ।
बक्कर[१२२] तां बूबूइ[१२३] जाम वनि वग्घ न पिक्खइ[१२४],
घूघू[१२५] तां घूघूइ[१२६] जाम रवि दीप न दिक्खइ[१२७] ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अलप-शकति ऊतावलउ[१२८], **भावकलस** तां झलफ(ह?)लइ,
लावण्यसमय कविकेसरी, जो पुहवि प्रगट जां नवि मिलइ ॥२०॥

सरोवर लहरि[१२९] न माइ[१३०] थाइ किम सायर तुल्लइ[१३१],
बग बहु धवलां[१३२] होइ हंस जामलि[१३३] कुण बुल्लइ[१३४]।
अति उन्नत आकरु करह[१३५] किम गयवर जडतु[१३६],
कहु किम सबल सीआल सीहसिउं पहुचइ भिडतु[१३७]।
इम उपमान अछइ घणां, हिअडइ हजी विमासीइ,
लावण्यसमयसी तुडि किसी, कलि **भावकलस** कां व्रासीइ[१३८] ॥२१॥

किहां रयण[१३९] कक्करु[१४०] किहां नर कायर सूरु,
कल्पवृक्ष कयरडु[१४१] किहां कर्पूर कचूरु[१४२]।
किहां मूरख किहां जाण कृपण दातार समाणउ[१४३],
रौरव[१४४] केरु रंक रायथी किम सपराणउ[१४५]।
तिम जोतां जामलि नहीं, **भाव** भलउ पणि **कलसीउ**[१४६],
लावण्यसमय कविकेसरी, जो अशेष[१४७] अलवि[१४८] किहां अलसीउ[१४९] ॥२२॥

सींगालउ[१५०] सिउं पसू(सु)-सींगि सींगडीउ कहीइ,
नाम धरिआं तइं सच्च अह्मे पुण निरति[१५१] न लहीइ।
नाग धरिउं तइं नाम नाग अलसीउ कि त्रंबउ[१५२],
भावकलस वलि नाम नामनउ घणउ विटंबउ।
भाव नाम निरतूं नहीं, अवर सच्च आव्यां हीअइ,
लावण्यसमय कविकेसरी, तुझ कवित-नाम उत्तर दीअइ ॥२४(२३)॥

वादरूप रणि चड्या पक्ष पहु[१५३] अंगी करीआ,
सुकवि सुभट तटि मिल्या सभ्य पंडित परिवरीआ।
वचन-वेध वर बाण जाण हिअडइ जव लग्गइ[१५४],
माण(न?) प्राण तब जाइ घणुंअ घूमी क्षणि जग्गइ[१५५]।
विद्या-वाद-रणंगणिइं, लोक लक्ष जोवा फिरइ,
लावण्यसमय मुनिवर भणइ, जो जयलच्छी विरला वरइ ॥२४॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वामजि मंडिउ वाद ओअ(?) आवीउ **वडावी**[१५६],
दीप-सूर-संवादि दीपनइं सोह[१५७] चडावी ।
सचराचरि[१५८] विख्यात वादनी वात सुणावी,
सज्जन-सभा समक्ष हारि मुखि इसी भणावी ।
लावण्यसमय पंडित सरिस, **भावकलस** इम उच्चरइ,
वाद करूं एणी कलिइं तु, **सेत्रुजगिरि** अह्म अंतरइ ॥२५॥

॥ इति दीप-सूरसंवादे दीपजयवादछंदांसि समाप्तानि ।
लिखितानि सं. १५६२ वर्षे वामजग्रामे ॥

शब्दकोश

१. करतां, २. शुकन, ३. स्पर्धा, ४. फूंकाय, ५. झवेरात, ६. ओळखाय, ७. ?, ८. केवी रीते, ९. केवा, १०. ?, ११. निंद्यो, १२. ?, १३. ?, १४. ?, १५. बाकोरुं, १६. घो, १७. सर्प, १८. ?, १९. खोटा, २०. ऊगे, २१. बापडी, २२. एकपण समय, २३. पीडा, २४. कमल(?), २५. वीणा, २६. आनंदपूर्वक, २७. जीते, २८. प्रथम, २९. विजयनी ध्वजा, ३०. अष्टप्रकारी, ३१. न थाय, ३२. ते, ३३. साथे, पासे, ३४. रचना कराय, ३५. छोडाय, ३६. वाणी, ३७. ?, ३८. नियम(?), ३९. शुं, ४०. प्रणाम करे, ४१. सेवा, ४२. श्रेष्ठ(?), ४३. वधे(?), ४४. गळायो, ४५. आकाशमां, ४६. छळायो, ४७. तेलथी, ४८. रखाएलो, ४९. संताय(अस्त थाय), ५०. बूममां, ५१. थूंकनो सोस, व्यर्थ परिश्रम, ५२. वादमां, ५३. शरू करे, ५४. लिखावट, ५५. मारो, ५६. अधुरुं मूक्युं, ५७. विचार्युं(?), ५८. मेळ जोई(?), ५९. उपकार, ६०. मर्म, ६१. मूर्ख, ६२. ओळख्या, ६३. नवा, ६४. शोभता(?), ६५. प्रहर, ६६. प्रभात, ६७. उद्भवते, ६८. जेनी पासेथी, ६९. साक्षी, ७०. भात, ७१. सूर्य, ७२. राखो, ७३. पदथी, ७४. न्यून, ७५. कहेने, ७६. वत्स, ७७. अयोग्य, अणछाजतां, ७८. ईर्ष्याथी, ७९. केवुं(?), ८०. आग्रहथी, पराणे?, ८१. ?, ८२. ?, ८३. घोडा, ८४. सात, ८५. युक्त, ८६. लगाम, ८७. विशाळ, ८८. समान, ८९. पुत्र, ९०. कर्मे, ९१. आसन, ९२. ना करतां, ९३. मोटाई, ९४. सोडमां, ९५. आग्रह(?), ९६. पश्चिमथी, ९७. हांकेलो, ९८. ठग्यो, ९९. जगाडाय, १००. तेड्या वगरनुं, १०१. विहीन, १०२. लक्ष्मी, १०३. दूध, १०४. ?, १०५. वात, १०६. रात, १०७. सीधी, १०८. पीडाय, १०९. खोट, ११०. नफो, १११. ?, ११२. ज्ञान(?), ११३. ऊभो करी, ११४. दबावे, ११५. राजा, ११६. पंडित, ११७. सज्ज करी, ११८. सांप, ११९. फुत्कार करे, १२०. तांबा नाणुं, १२१. सोनामहोर, १२२. बकरू, १२३. बें बें करे, १२४. जुवे, १२५. घुवड, १२६. अवाज करे(?), १२७. जुवे, १२८. उतावळो, १२९. मोजा, १३०. समाय,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१३१. तुलना करे, १३२. श्वेत, १३३. समान, १३४. बोले, १३५. ऊंट, १३६. तुलना(?) कराय, १३७. लडतां, १३८. भ्रांतिमां रहे, १३९. रत्न, १४०. कांकरो, १४१. केर, १४२. एक वनस्पति, १४३. समान, १४४. भयंकर(?), १४५. बळवान, श्रेष्ठ(?), १४६. लोटो, १४७. ?, १४८. ?, १४९. अळसियुं, १५०. शियाळ, १५१. स्पष्टता, १५२. ?, १५३. ?, १५४. लागे, १५५. जागे, १५६. ?, १५७. शोभा, १५८. विश्वमां बधे.

❋ ♦ ❋

(अनुसंधान पेज नं ३४ पर से)

श्री शंखेश्वरतीर्थ समीपस्थ पंचासरग्राम मध्ये निर्माणाधीन मूलनायक श्री पार्श्वनाथ प्रभु प्रतिमा शिला प्रथम टांकणी, पार्श्वनाथप्रभु की चल प्रतिष्ठा, श्री माणिभद्रवीर स्थापन तथा श्री शक्रस्तव महाभिषेक पूजन प्रसंग सानंद सम्पन्न

श्री शंखेश्वरतीर्थ समीप पंचासर ग्राम में सम्राट सम्प्रति आर्य शिल्प शाला,चेन्नई द्वारा निर्माणाधीन श्री पुरुषादानीय शंखेश्वर पार्श्वनाथ सवा लाख भगवान तीर्थ संकुल में राष्ट्रसंत प.पू. आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा, ज्योतिर्विद पू. आचार्यदेव श्री अरुणोदयसागरसूरीश्वरजी म. सा., पू. आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरीश्वरजी म. सा., पू. गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी म. सा. तथा प. पू. आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के समुदाय के आज्ञानुवर्तिनी साध्वीजी भगवंत आदि श्रमण-श्रमणी भगवंतों की पावन निश्रा में दि. 10 मार्च 2022 को श्री पार्श्वनाथ प्रभु प्रतिमा शिला प्रथम टांकणी सहित प्रभु की चल प्रतिष्ठा, श्री माणिभद्रवीर स्थापन तथा श्री शक्रस्तव महाभिषेक पूजन इत्यादि कार्यक्रम किया गया।

इस शुभ अवसर पर प्रातः 6.30 बजे स्नात्र महोत्सव, 7 बजे श्री पाटला पूजन, नवग्रह-दशदिक्पाल पूजन, 7.30 बजे पूज्य गुरुभगवंतों का सामैया-वरघोडा, 9 बजे धर्मसभा, तीर्थ निर्माणसंबधी सिंहावलोकन, 11 बजे पार्श्वनाथ प्रभु की चल प्रतिष्ठा, श्री माणिभद्रवीर देव स्थापन, अखंड दीप प्रज्ज्वलन, शिला टांकणी तथा दोपहर 12.30 श्री शक्रस्तव महा अभिषेक किय जायेगा।

माणिभद्रवीरदेव स्थापन का लाभ गवरमेन्ट ऑफ इन्डिया एस.आई.टी. के चेरमेन श्री मनहरलालभाई शाह तथा श्री वर्धमान सेवा केन्द्र- कलिकुंड, धोलका के प्रेसिडेन्ट श्री कुमारपालभाई वी. शाह द्वारा लिया गया। श्री माणिभद्रवीर की अखंड ज्योति प्रगटाने का लाभ श्री राजुभाई (भिवंडीवाले) ने लिया। इस पावन प्रसंग के अवसर पर अनेक श्रद्धालुभक्तों ने हर्षोल्लास के साथ भक्ति का लाभ लिया।

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कनकसागर मुनि कृत

बलुंदातीर्थमंडन श्री शांतिनाथजी स्तवन

राहुल आर. त्रिवेदी

पूर्वाचार्योए जीवोना बोधादि माटे आगमोमांथी सारभूत पदार्थो उद्धरी प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंषादि भाषाओमां अनेक कृतिओनी रचनाओ करी। समय जता तत् तत् कालीन प्रादेशिक देशी भाषामां सामान्यजनोने ध्यानमां राखी गेयकाव्यो चोपाई, रास छंद वगेरेनी रचनाओ पण थई। तेमांय खास करीने भक्तिकाव्योनुं प्रमाण विशेष रह्युं। एवा ज भक्तिकाव्योमांथी एक अप्रगट रचना "बलुंदातीर्थमंडन श्री शांतिनाथजी स्तवन" छे, जे प्रकाशित करवामां आवे छे।

कृति परिचय

प्रस्तुत कृति बलुंदानगरमां शोभायमान सोलमा श्री शांतिनाथ भगवाननी रचना छे, जे वाचको माटे प्रायः नवी अने ध्यानाकर्षक बाबत कही शकाय। कृतिनो रचना समय कृतिने अंते कर्ताए वि. सं. १७७८ दर्शाव्यो छे। आ कृतिना रचना स्थळनो स्पष्ट उल्लेख नथी पण चातुर्मासमां रचना कर्यानी वात कर्ताए नोंधी छे, तेना आधारे अनुमान करी शकाय के आ चातुर्मास बलुंदानगरमां ज थयुं होय अने रचना पण त्यां ज थई होय। प्रभुनी स्तवना साथे कविए भगवानना जीवनवृत्तांतना केटलाक मुद्दाओने आवरी लीधा छे। ते आ प्रमाणे छे-

कुरु देशमां प्रख्यात हस्तिनापुर नगर, त्यां विश्वसेन राजा, अचिरा राणी, तेमनी कूखे भादरवा कृष्ण पक्ष सातमना दिवसे सर्वार्थसिद्ध विमानथी प्रभुनुं च्यवन, चौद स्वप्न, जेठ वद चौदशना दिवसे भगवाननो जन्म, इंद्रो अने छप्पन दिक्कुमारीओ द्वारा जन्मोत्सव। भगवाननो वर्ण- कंचन, प्रभुनो कुमारावस्था काळ- पचीस हजार वर्ष, चक्रवर्ती पणे राज्यपालन - पचास हजार वर्ष, आम गृहस्थ पर्याय- पंचोतेर हजार वर्ष, वर्षीदान- एक कोडि आठ लाख दीनार (प्रतिदिन), जेठ वद चौदशना दिवसे दीक्षा ग्रहण, दीक्षातप- छट्ठ, पौष सुद नौमना दिवसे केवळज्ञान प्राप्ति। दीक्षापर्याय- पचीस हजार वर्ष आटलुं जणावी कविए प्रभुनी संपदा वर्णवी छे तेमां- तेमनी गणधर संख्या- ३६, साधु संख्या- ६२,०००, साध्वी संख्या- ६१,६००, व्रतधारी श्रावको- २,९०,०००, श्राविका- ३,९३०००, आटलुं जणावी प्रभुनुं देहमान ४० धनुषनुं, लंछन-मृग दर्शाव्युं अने जेठ वद चौदशना दिवसे प्रभुना मोक्षगमननी वात वर्णवी छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊपरोक्त मुद्दाओ तथा विशेषणो साथे १९ गाथामय आ रचना भाववाही छे। कवि कहे छे के शांतिनाथ भगवानने जे नर-नारी भावथी वंदना करे, पूजन करे छे ते अनंत सुखने पामी मोक्षगतिने प्राप्त करे छे। कर्ताए १८ गाथामां स्तवना करी १९मी गाथा कळशरूपे प्रस्तुत करी छे, जेमां पोतानी गुरुपरंपरा सह पोतानो नामोल्लेख करेल छे।

कर्ता परिचय

तपागच्छाधिराज आचार्य विजयरत्नसूरि तेमनी पाटे आ. विजयक्षमासूरिनी परंपरामां थयेल कवि उदयसागरजीना शिष्य कनकसागरजी मुनि छे। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबामां संग्रहित सूचनानुसार तेमनी एकमात्र कृति प्राप्त थाय छे। कर्ता संदर्भे जैन गूर्जर कविओ आदिमां कोई माहिती प्राप्त थती नथी। कर्तानी अन्य कोई रचना अने परंपरा माटे विद्वद्‌जनो संशोधन करे।

प्रत परिचय

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबानी एकमात्र हस्तप्रत क्र. ००३१२९६ना आधारे प्रस्तुत कृतिनुं संपादन करेल छे। आ प्रतिना बे पाना छे जेमां पांच पेटाकृतिओनो समावेश थयो छे ते पछीना पानाओ अप्राप्य छे। प्रस्तुत कृति पत्रांक-१अ-१आ पर आवेली छे। प्रतमां मध्याक्षर फुल्लिका, विशेष पाठने लालरंगथी अंकित करेल छे। अक्षर सुंदर ने सुवाच्य छे। प्रत अनुमानित १८वीं सदीनी होवानी संभावना जणाय छे।

बलुंदातीर्थमंडन श्री शांतिनाथजी स्तवन

॥र्द०॥ श्री ऐं नमः॥ सीता तो रूपै रूडी जाणै आंबा डालै सूडी हो सीता अति सोहै- ए देशी ॥

सोलमो जिणवरदेव, नित कीजै तेहनी सेव हो। शांतिजिन सेवो बे..
बलुंदानयर मझार, सहू सेवकनै सुखकार हो ॥१॥ शांति०...

दीठां दुरगति दूर, पातक थांइं चकचूर हो। शांति०...
एकमनां जे ध्यावै, ते मनवंछित सुख पावै हो ॥२॥ शांति०...

कुरु जनपदमांहै जाणुं, हथिणाउ(पु)रनगर वखांणुं हो। शांति०...
विश्वसेन तिहां राजा, जेहना छै चडत दवाजा[1] हो ॥३॥ शांति०...

१.शोभा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अचिरा राणी तस भज्जा[२], रति देखि करै बहु लज्जा हो। शांति०...
भाद्रवमास अंधारी, तिथि सातमि छै सुखकारी हो ॥४॥ शांति०...

शर्वारथसिद्धिथी चविया, चउसठि इंद्रा मिलि तवीयां हो। शांति०...
सुहिणा[३] चौदह निरखी, अचिरा राणी मनि हरखी हो ॥५॥ शांति०...

जेठ वदि चउदसि जाया, सुरनर सघलां सुख पाया हो। शांति०...
कांचनवरणी काया, प्रणमै जसु सुरनर पाया हो ॥६॥ शांति०...

छपनकुमरीइं गाया, चोसठि इंद्रे न्हवराया हो। शांति०...
सहसवरस पचवीस, कुंअरपणै रह्या जगदीस हो ॥७॥ शांति०...

विश्वसेनै राज्य दीधो, जगमां सगले जस लीधो हो। शांति०...
सहस पचास व्यतीता, चक्रवर्ति थया वदीता हो ॥८॥ शांति०...

छ खंड धरती साधी, जैन धर्म भलो आराधी हो। शांति०...
सहस पच्योतर वरीस, गृहवास रह्या जगदीस हो ॥९॥ शांति०...

लौकांतिक सुर आवै, दीख्यानो समय जणावै हो। शांति०...
एक कोडि आठ लाख, दीनांर[४] दीइं सहु साख हो ॥१०॥ शांति०...

जेठ वदि चउदिसि दिवसै, जिनवर शिबिकाइं बैसै हो। शांति०...
छठ तणो पचखांण, जिन तप कीधौ सुविहाण हो ॥११॥ शांति०...

सुदि नवमी पोस मास, पाम्यो केवल जिनजी खास हो। शांति०...
पाली दिक्षा जगदीस, सहस पचीस वरीस हो ॥१२॥ शांति०...

गणधर छतीसह जाणुं, बासठि सहस साधु वखाणु हो। शांति०...
छसै इकसठि सहस, साधवी हूइ ए रहस हो ॥१३॥ शांति०...

बि लाख नेउहजार, श्रावकव्रत उदारी हो। शांति०...
तीन लाख त्राणु हजार, थई श्राविकाव्रत धार हो ॥१४॥ शांति०...

च्यालीस धनुषनुं देह, सहु करमनी टाली रेह हो। शांति०...
जेठ वदि चौदसि सार, पहुता जिन मोक्ष मझार हो ॥१५॥ शांति०...

भावै वांदौ भगवंत, जिम पामौ सुख अनंत हो। शांति०...
जे पूजै नरनारी, पंचमगति तेहने प्यारी हो ॥१६॥ शांति०...

---

२. पत्नी, ३. स्वप्न, ४. एक प्राचीन चलणी सिक्को,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुं तारणतरण जिहाज, मुझ सारो वंछित काज हो। शांति०...
एक करुं अरदास, आपौ मुझ अविचल वासा हो ॥१७॥ शांति०...
सतर अठ्योतर वरषे, चउमास रह्या अति हरषै हौ। शांति०...
मृगलांछिन जिन गायो, मनवंछित बहु सुख पायो हो ॥१८॥ शांति०...

॥ कलश ॥

श्री शांतिजिनवर सयल सुखकर, भव्य जीवनइं तारणौ,
मैं भले भेट्यो पाप मेट्यो, दुःख दोहग[५] वारणो।
तपगच्छ राजा चढत दवाजा, श्री विजयरत्नसूरीसरो,
तस पट्टि तेज प्रताप दिनकर, श्री विजक्षिमासूरीसरो।
तस गच्छ सौहै भविक मोहै, उदयसागर कविवरो,
तस सीस जंपै कनकसागर, सकल संघ मंगल करो ॥१९॥

॥ इति श्री शांतिजिन स्तवन संपूर्णम् ॥

❋ ♦ ❋

(अनुसंधान पेज नं २९ पर से)

अमारी दृष्टिए प्राचीन लेखोवाळी कुशान, कनिष्क अने हविष्यकालीन मूर्तिओ छे। एक कंकाली टीलानो शिलालेख शंखाकार अक्षरोमां छे ते पण प्राचीन लाग्यो। आ सिवाय विक्रमनी नवमी शताब्दी पछीना शिलालेखो छे जेमांना थोडा अमे वांच्या हता। कुशान अने कनिष्क तथा हविष्यकालीन मूर्तिओना शिलालेखो तो अमाराथी न वंचाया पण दरेक मूर्तिनी नीचे इंग्लीश नोंध हती। केटलाकमां हिन्दी नोंध पण हती ते वांची।

अहीं लगभग दोढसोथी बसो जिनमूर्तिओ छे। पचीस उपरांत ते चोवीसीओ (पत्थर) नी मूर्तिओ छे। मूर्तिओमां ते पांच पचीस सिवाय बाकी बधी खंडित छे। कोईकना कान, तो कोईकना नाक, कोईकनी आंखे ते कोईकना हाथ, कोईकना पग तो कोईकना गोठणु खंडित छे। केटलीक मूर्तिओनां तो भव्य विशाल मस्तक ज छे। ज्यारे केटलीक मूर्तिओनां धड अने शिलालेखो छे। वळी केटलीक मूर्तिओना मात्र पग अने शिलालेखो छे। लगभग पचासेक आयागपट्टना टुकडा छे, दस वीस टुकडा अर्धा उपर छे। थोडा आखा छे अने बाकीना तो खंडित ज छे।

(क्रमशः)

५. दुर्भाग्य.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आगम प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज - अपूर्व श्रुतभक्ति अने अदम्य ज्ञानपिपासा

डॉ. कुमारपाळ देसाई

वर्षो सुधी प्रेरणा आपे एवी अपूर्व श्रुतभक्ति अने अनेक ज्ञानपिपासुओ माटे दीवादांडीरूप बनी रह्युं छे आगमप्रभाकर मुनिराजश्री पुण्यविजयजी महाराजनुं जीवन। हस्तप्रतभंडारोनी जाळवणीथी मांडीने प्राचीन हस्तप्रतोना संपादन सुधीना विराट फलक पर मुनिराज पुण्यविजयजीनी प्रतिभा अने प्रभावकता जोवा मळे छे।

ओछुं बोलवुं अने वधु करवुं, सदासर्वदा एकाग्र बनीने बने तेटलुं नक्कर अने प्रमाणभूत कार्य करवुं ए एमनी खासियत हती। एमनी कार्यसिद्धिनो ए मर्म हतो के तेओ उत्सव-महोत्सव अथवा तो मान-सन्माननी धामधूम के प्रशंसाना मनमोहक उद्गारो जेवी क्षणजीवी प्रवृत्तिओथी दूर हता अने अनेक सैकाओ सुधी समाज, साहित्य अने संस्कृतिनी सेवा बजावी शके एवी नक्कर कर्तव्य-परायणता एमना अंतरमां वसती हती। साहित्यसेवा अने संशोधनमां रत होवा छतां एमना चहेरा पर सदाये आनंद अने प्रसन्नता छलकातां हतां। ज्ञाननी ऊंडी उपासना होवा छतां एने माटेनुं लेश मात्र अभिमान न हतुं।

सोळ सोळ महिना सुधी कोई पण प्रकारनी साधनसामग्री विना सिंधना रणना बळबळता अने वेरान प्रदेशनी पासे आवेला जेसलमेरनगरना प्राचीन अने बहुमूल्य ज्ञानभंडारोना उद्धारनुं अविस्मरणीय कार्य तेओए कर्युं। कोई पण प्रकारनी सगवड नहि अने बळबळता तापमां अंधारियां स्थानोमां रहेली हस्तप्रतोने जीवनी पेठे जतनथी जाळवीने बहार काढवानुं, एने सुरक्षित करवानुं अने एनी सूचि तैयार करवानुं महत्त्वनुं कार्य आगमप्रभाकर मुनिराज पुण्यविजयजीए कर्युं।

जेसलमेरना विहार माटे श्री पुण्यविजयजी महाराज अमदावाद थईने जई रह्या हता। एक दिवस वहेली सवारे रणुंजथी तेओए रेलना पाटे पाटे विहार शरू कर्यो पूरा प्रकाशना अभावे एमणे गरनाळाने न जोयुं अने गरनाळाथी १५-१७ फूट नीचे पडी गया। पण जे शक्तिए बाल्यावस्थामां आगथी अने मोटी उंमरे संग्रहणीना व्याधिमांथी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेओने बचावी लीधा हता। तेणे ज आ वखते पण एमने आबाद बचावी लीधा हता। आटले ऊंचेथी पडवा छतां एमने खास कंई वाग्युं नहीं अने ते पछी तेओए तेरेक माईलनो विहार कर्यो !

प्राचीन ग्रंथोनां एकसरखा मापनां भेळसेळ थई गयेलां, पानांओथी तेमज ताडपत्रीय ग्रंथोना टुकडाओमांथी आखा के अधूरा ग्रंथोने तैयार करी आपवानी तेओनी सूझ अने निपुणता आश्चर्यचकित करे एवी हती। चोंटीने रोटलो थई गयेली कंईक प्रतो एमना हाथे नवजीवन पामी।

एमनुं स्मरण थतां ज एमना व्यक्तित्वनी केटलीक विशेषताओ याद आवे छे। तेओ क्यारेय भींतने टेको दईने बेसता नहि। मोटा अने चोख्खा अक्षरोए लखता। जवल्ले ज वर्तमानपत्र वांचता हता। कामनो क्यारेय कोई कंटाळो नहि। प्राचीन ग्रंथ विशे माहिती मेळववी होय; संशोधन, संपादननी विद्या जाणवी होय तो तेओ बधी प्रवृत्ति छोडीने सहेजे कंटाळो के अणगमो अनुभव्या वगर कलाकोना कलाको सुधी काम करता हता। ऋतु कोई पण होय पण क्यारेय कोई दिवस तेओ आराम करता नहोता। एमनां निद्रा अने आहार अल्प हतां। वळी पोताना संग्रहमां होय ते हस्तप्रतो अने वस्तुओ स्नेहपूर्वक बतावता। कोई संशोधक एमनी पासे कोई माहिती मागे तो तरत ज शोधी आपता हता। वळी पोताना ज संप्रदायनां नहीं, बल्के तमाम संप्रदायना साधु-साध्वीओ तरफ आदर राखता अने तेमने जे कोई हस्तप्रत के अन्य जरूरियात होय तो ते तरत आपता हता। तेओए ज्यां ज्यां यात्राओ करी ते ते तीर्थोमां पूर्वे आवेला तीर्थंकरो, गणधरो के तपस्वीओनी चरणरजरूप थोडी थोडी रजनो पूज्यभावथी एमणे संग्रह कर्यो हतो।

कोई भंडारमां एक ग्रंथ जोयो होय अने एना खूटता पत्रो बीजा ग्रंथभंडारमां जोतां तेमने तरत ज याद आवी जतुं के में आवा पत्रो अमुक स्थळे जोया छे। आवी याददास्तने कारणे ज लोकप्रकाशना उपाध्याय विनयविजय कृत प्रथम खरडाना पत्रो भेगा कर्या अने अद्भुत पोथी प्राप्त थई। कोई कामने तेओ तुच्छ के हलकुं गणता नहोता। जेसलमेरमां सुथार निशान प्रमाणे छिद्र करी शकतो नहोतो तो एमणे जाते सारडी लईने ए काम कर्युं हतुं। विद्वानो प्रत्ये आगम-प्रभाकर मुनिराजने अगाध आदर हतो। कोई विद्वान मळवा आव्या होय तो एमनी साथे पाठ-चर्चामां एवा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओतप्रोत बनी जता के सांजना चोविहारना समयनो ख्याल रहेतो नहीं अने तेओ पाणी विना चलावी लेता।

जेसलमेरना ग्रंथभंडार विशे अगाउ डॉ. बुहलर, डॉ. सी. डी. दलाल, पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजयजी अने खरतरगच्छना आचार्यश्री हरिसागरसूरिजी महाराजे नोंधो करी छे, परंतु आ नोंधोमां घणी विगतो अने ग्रंथोनो उल्लेख मळतो नथी। केटलाक ग्रंथो अपूर्ण होवानी नोंध मळे छे। जे हकीकतमां संपूर्ण छे। आगमप्रभाकर मुनिराजे जेसलमेरना ग्रंथभंडारनी एकेएक हस्तप्रत जोई अने तेनी सूचि तैयार करी जेसलमेरमां तिलकमंजरीनी ताडपत्रीय पोथी के जेना टुकडेटुकडा थई गयेला ते पत्रखंडो मात्र लिपिना आधारे ओळखीने भेगा करेला।

ग्रंथसंपादनना कार्यमां तेओने वरेली असाधारण सिद्धिनां कारणो अनेक छे। तेओ शास्त्रना विषयथी अने ग्रंथमां आवता इतर साहित्यना संदर्भोथी सुपरिचित रहेता अने जे बाबत तेओनी समजमां आवती न होय ते बाबत विशे अथाग प्रयत्न करीने खुलासो मेळवीने ज आगळ वधता। अक्षरोना विविध मरोडो छतां जुदा जुदा सैकानी लिपिने उकेलवामां तेओ सिद्धहस्त हता अने एथीय विशेष तो शास्त्रोना संशोधननी बाबतमां एमनां धीरज अने खंत साचा अर्थमां अपार हतां। सत्यनी एकाद हीराकणी माटे पण तेओ दिवस-रात मथामण कर्या करता अने आटलुं बधुं करवा छतां तेना भारथी मुक्त बनीने सदा प्रसन्न रहेता।

आवा आदर्श संशोधनग्रंथोनां अनेक नाम लेखावी शकाय, पण एनी यादी आपवानुं आ स्थान नथी। तेओए आगमसंशोधननुं जे महान कार्य आरंभ्य हतुं, ते तो एमना ज्ञानमय व्यक्तित्वना साररूप अने पंदरसो वर्ष पहेलां महान आगमप्रभाकर श्री देवर्धिगणिक्षमाश्रमणे करेलुं आगम-संकलन जेवुं शकवर्ती अने सुदीर्घ काल सुधी उपकारक कार्य हतुं। प्राचीन जीर्णशीर्ण हस्तप्रतो तो जाणे पुण्यविजयजी महाराजना हाथमां आवतां ज पोतानी आपवीती कहेवा लागती !

आगमप्रभाकर मुनिराजनी ज्ञानसाधनानी विरल एवी केटलीक विशेषताओ विशे हवे पछी।

(क्रमशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लखनौ म्युझीयमनी जैन मूर्तिओ

लेखक- मुनिराज श्री न्यायविजयजी

(जैन सत्य प्रकाश, वोल्युम-१, अंक-११ व १२, ई.स.१९३६ से साभार)

मथुरा जैनो माटे ऐतिहासिक दृष्टिए बहु ज महत्त्वनुं स्थान छे। मथुरामांथी घणी प्राचीन जैन मूर्तिओ अने मंदिरो नीकळ्यां छे। विद्वान इतिहास प्रिय जैनोथी आ धाम अजाण्युं नथी। पू. प. श्री ज्ञानविजयजी महाराजश्रीए मुंबई समाचारना दीपोत्सवी अंकमां "मथुरानो कंकाली टीलो" नामनो लेख प्रगट करावी तेनी विगत बहार मुकेल छे, परंतु त्यांनी प्राचीन जैन मूर्तिओ अत्यारे लखनौना म्युझीयममां राखवामां आवेल छे, एटले एनुं वर्णन अहिं नीचे आपवामां आवे छे।

- लेखक

लखनौ यु. पी. नुं केन्द्रस्थान मनाय छे। यु. पी. ना गवर्नर अहीं ज रहे छे अने यु. पी. नी धारासभा पण अहीं ज भराय छे। जैनोनां १३–१४ मंदिरो छे अने तेमांय तपगच्छनुं मंदिर बहु ज प्राचीन छे। मूर्तिओ मुगलाईना समय पहेलांनी छे। जैनोनी वस्ती एक वार अहीं विपुल प्रमाणमां हशे; तेम सुखी, धनाढ्य अने धर्मप्रेमी हशे, जेनी खात्री जुनां सुंदर जिनमंदिरो आपे छे। मुसलमानोना धामरूप आ स्थानमां आवां मंदिरो आबाद रहे ते जैनो माटे ओछा गौरवनी वात नथी। अत्यारे तो ए जैनमंदिरनी पूरी व्यवस्था पण नथी करी शकता। लखनौ मुगलाई जमानानुं सुंदर, रंगीलुं अने विलासी शहेर मनाय छे। अत्यारे पण अहीं विद्यारसिक अने विलासी वस्ती वसे छे। लखनौनुं म्युझीयम (Museum) खास वखणाय छे। पुराणी वस्तुओनो संग्रह अहिं ठीक छे, तेमां श्रावस्ती (सटेमटेका कीला) ना पुराण सिक्का अने प्राचीन वस्तुओ तथा शिलालेखो खास प्रेक्षणीय छे। राजा हर्षवर्धनना हस्ताक्षरनो शिलालेख अने कुमारगुप्त आदिना लेख इतिहास प्रेमीओना मनने बहु ज आकर्षे छे।

अमे प्रथम लखनौनुं म्युझीयम जोवा गया त्यारे उपर्युक्त शिलालेखो अने त्यां रहेल धातुनी प्राचीन जिनमूर्तिओनां दर्शन कर्या हतां। एक मूर्ति जे हरद्वारथी आवेली छे, तेमां १२०० नी सालनो लेख छे। एकमां १६५१ नी साल छे जे बीथुरथी आवेल छे अने बीजामां १६५२ नी साल छे जे जयपुरथी आवेल छे। लखनौनी मूर्तिमां मारवाडी अक्षरोवाळो लेख छे। मूर्ति सुंदर छे। बे पाषाणनी मूर्तिओ अने एक अंबिकानी सुंदर, कळाना नमुनारूप मूर्ति छे, जेनी उपर यादवकुलमणि बालब्रह्मचारी श्रीनेमनाथ प्रभुनी मूर्ति छे। आवी रीते नानी मूर्तिओनां तो दर्शन कर्या, परंतु मथुरानी मूर्तिओनां क्यांय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दर्शन न थयां। अमे आ संबंधी पहेलेथी ज लक्ष्य राख्युं हतुं के आपणे अहीं मथुरानी मूर्तिओ तो जरूर जोवी। आ सिवाय मथुराना कंकाली टीलामांथी नीकळेल सातसो टुकडा छे। पण तेमांनुं ते अहिं कांई पण जोवा न मळ्युं। शोधखोळ आरंभी, तपास करतां मालुम पडयुं के नीचेना विभागमां जुओ। त्यां तपास करी ते त्यां ते शान्तिनाथ प्रभुनी प्रतिमाजी अने तेमनां शासन देवी जोवा मळ्यां, किन्तु अमारी अभिलाषा न फळी। पछी त्यांना विद्वान क्युरेटर साहेबने मळ्या। तेमने बधुं वीगतवार पुछ्युं त्यारे तेमणे कह्युं, हां प्राचीन जैन मुर्तिओ अने घणा जैन अवशेषोनो संग्रह अहिं छे। पण ते अत्यारे बंध छे। आप काले दश वागे अहीं पधारशो एटले हुं माणस मोकली ते बधुं आपने बतावीश। बीजे दीवसे स्हवारमां ज जवानी तैयारी करी। कडकडती ठंडीमां त्यां जवा उपडया। त्यां पहोंचतां चोकीदार सिपाईए कह्युं, आज शुक्रवार होवाथी म्युझीयम बंध छे। अमने भारे निराशा उपजी। पछी पुछतां पुछतां जे स्थाने जैन विभाग हतो त्यां गया अने बहार वरन्डामां रहेली प्राचीन जैनमूर्तिओ, मंदिरना विभागो, आयागपट्टो अने बीजा पण अनेक जैनत्वसूचक अवशेषो जोया। दोढ कलाक त्यां गाळ्यो हशे एटलामां क्युरेटर महाशयनो मेळाप थयो। तेमणे कह्युं आज तो म्युझियम बंध छे अने अमारी ऑफिस पण एक वागे बंध थशे, किन्तु आप पगे चालता आव्या छो तो खास खोलावुं छुं। एम कही सिपाई मोकली होल खेलाव्यो, अने विशेष मदद माटे पोतानी ईच्छा व्यक्त करी।

आ स्थान म्युझियमथी बे फर्लांग दूर छे। जेने केसरबाग कहेवामां आवे छे। पहेलां म्युझियम अहीं हतुं। त्यांथी उठी अत्यारे जे स्थाने छे त्यां गयुं अने केसरबाग यु. पी. नी धारासभानो होल–चेम्बर होल बन्यो। अहिं प्रतिकूळता जणायाथी धारासभा माटे बीजो होल बन्यो अने अहीं जैन विभागने स्वतंत्र स्थान मळ्युं छे। अहिं तो कोई इतिहास-पुरातत्त्व प्रेमी वीरलो शोधक पुरुष आवे छे, अने घणा प्रयास पछी ज आ स्थाननां दर्शन पामे छे।

अमे प्रथम ज ज्यारे केसरबागना अंदरना होलमां गया अने चारे दिशामां विराजित सुंदर जिनमुर्तिओनां दर्शन कर्या त्यारे अमने अनेक अकथ्य लागणीओ थई। अमे प्रथम तो चोतरफ जोवा ज मंडी गया, पण विचार्युं के आम जोवाथी आपणो उद्देश नहि फळे एटले पछी बधी क्रमश :- गोठव्या मुजब (जो के नंबर प्रमाणे मूर्तिओ गोठवेली नथी, पण जे प्रमाणे गोठवी हती ते नंबरवार) बधी मूर्तिओ, मंदिरना विभागो वगेरे वगेरे एक वार जोई लीधुं अने पछी ज नंबर टांकी नोंध करवा मांडी।

(अनुसंधान पेज नं २४ पर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

लेखक - डॉ. हेमन्त कुमार

पुस्तक नाम : श्रीमद् देवचंद्रजी कृत चौबीसी

कर्ता : श्रीमद् देवचंद्रजी म. सा.

बालावबोध : श्रीमद् देवचंद्रजी म. सा.

अनुवादक : श्री कलापूर्णसूरिजी (गुजराती) एवं श्री बसंतीलालजी नलवाया (हिन्दी)

संपादक : श्री प्रेमलभाई कापडिया

प्रकाशक : हर्षदराय हेरिटेज, हर्षदराय प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई

प्रकाशन वर्ष : वि. सं. २०६१

आवृत्ति : प्रथम

भाषा : मूल एवं स्वोपज्ञ बालावबोध- मारुगूर्जर, विवेचन-गुजराती एवं हिन्दी

विशेषता : परमात्मा के असाधरण गुणों के वर्णन के साथ आत्मविकासलक्षी मार्ग को अद्भुत रीत से प्रकाशित करता स्तवन।

देवचंद्रचौबीसी, देवचंद्रचोवीसी या स्तवनचौवीसी आदि के नाम से सुप्रसिद्ध यह स्तवन समग्र जैन संघ में सुपरिचित है। वर्तमान चौबीसी के चौबीस तीर्थंकर परमात्मा के असाधारण गुणों की स्तुति करते हुए विशिष्ट तत्त्वज्ञानमय भक्तिमार्ग को प्रकाशित करता यह स्तवन अनेक धार्मिक क्रियाओं में भी समाहित हो चुका है। भौतिक सुख संपदा की कामना से की जानेवाली स्तुति-प्रीति विषैली होती है, ऐसी प्रीति तो प्रत्येक जीवात्मा जन्मजन्मान्तर से करता चला आ रहा है, किन्तु मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका है। भौतिक सुख संपदा एवं उसकी कामना आत्मा को मलिन-दुषित करती है, जबकि परमात्मा की स्तुति-प्रीति एवं उनके केवलज्ञानादि महान गुणों के प्रति असीम श्रद्धा, आत्मा को चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति हेतु मार्ग प्रकाशक की तरह सहायक सिद्ध होता है।

परमात्मा की अतुल, अद्वितीय गुणसंपदा के यथार्थ वर्णनरूप पूज्यश्री ने स्तवनरूपी भक्तिगंगा की अविरल धारा को प्रवाहित किया है। अत्यन्त हृदयवेधक इन स्तवनों का जैसे-जैसे स्मरण, मनन एवं चिन्तन होता है, वैसे-वैसे प्रसन्नता एवं हर्षानुभूति की वृद्धि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होती जाती है। चैत्यवंदन आदि क्रियाओं में जब-जब इन स्तवनों के मार्मिक गाथाओं का उपयोग होता है, तब-तब हृदय में अति भावोल्लास जागृत होता है।

इन स्तवनों की गूढता को समझने के लिये कृतिकार ने स्वोपज्ञ बालावबोध की रचना कर मार्ग सरल बनाने का प्रयास किया, किन्तु बालजीवों के लिये फिर भी दूरूह ही बना रहा। अनेक पूज्य महात्माओं द्वारा प्रवचन आदि में इस स्तवन का विवेचन हिन्दी, गुजराती भाषा में किया जाता रहा है। साथ ही इसका अनुवाद भी हिन्दी एवं गुजराती भाषा में किया गया है, फिर भी दूरूहता बनी रही। इसी दूरूहता को दूर करने हेतु पूज्य श्री कलापूर्णसूरिजी म. सा. ने इसका गुजराती भाषा में सरल अनुवाद-विवेचन करके भक्तों के लिये मार्ग प्रशस्त किया है। किन्तु हिन्दी भाषी भक्तों के लिये फिर भी सरल नहीं हो सका इसलिए श्री बसंतीलालजी नलवाया (रतलाम वाले) ने हिन्दी भाषामय सरल अनुवाद-विवेचन किया, जो हिन्दी भाषी भक्तों के लिए एक वरदान स्वरूप सिद्ध हुआ। श्री कापडियाजी ने मूल, स्वोपज्ञ बालावबोध, गुजराती अनुवाद एवं हिन्दी अनुवाद सभी को एक साथ प्रकाशित करके प्रत्येक भक्तों के लिए मार्ग सुगम बना दिया।

प्रस्तुत प्रकाशन में सर्वग्राह्य एवं बहुप्रचलित मूलपाठ को प्राचीन लिपि में ही प्रकाशित कर वाचकों को प्राचीनलिपि का दर्शन कराने का अनुपम उपकार किया है। संपूर्ण पाठ को सुवर्णपट पर लाल, नीला एवं भूरे रंग में मूल गाथाओं को लिखवाकर प्रकाशित किया गया है, साथ ही सभी गाथाओं को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने हेतु उत्तमोत्तम प्राचीन सचित्र हस्तलिखित ग्रंथों का आधार लिया गया है। बहुमूल्य ऐतिहासिक सचित्र हस्तप्रतों के अतिसुंदर किनारियों से प्रत्येक गाथाओं को सुशोभित किया गया है। इस ग्रंथ में जैन चित्रकला का अद्वितीय संकलन किया गया है। वाचक वर्ग के लिये इस प्रकार की अनुठी कलाकृतियों का दर्शन भी अन्यत्र दुर्लभ है। इस ग्रंथ के अवलोकन से यह पता चलता है कि जैन जगत के उत्कृष्ट, सुंदर एवं दुर्लभ चित्रकला को देशभर से एकत्र कर इस पावन ग्रंथ की शोभा में चार चाँद लगा दिया गया है। मारुगूर्जर भाषा में लिखित टबार्थ को भी उसी रूप में प्रकाशित कर वाचकों के लिये अति उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। पूर्वकालीन महात्माओं द्वारा लिखित शब्द प्रायः गूढार्थयुक्त, विविध नयसापेक्ष वाले होते हैं, इसलिए उनके रचित ग्रंथों को समझने में उपयोगी विषयों का योग्यरूप से समायोजन किया गया है।

परिशिष्ट में स्वप्न में आए चित्रों का विवरण, पारिभाषिक एवं कठिन शब्दों के अर्थ तथा जिन संस्थाओं की ओर से उन्हें चित्र उपलब्ध करवाए गए हैं, उन संस्थाओं के नाम के साथ आभार दर्शन प्रकाशित करके इस प्रकाशन को और अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समग्र जैन संघ के लिये अति महत्त्वपूर्ण इस पावन ग्रंथ को सचित्र प्रकाशित कर परम दानवीर श्रीमान प्रेमलभाई कापडिया ने विक्रम संवत २०६१ में सर्वोत्कृष्ट व सर्वोपयोगी महाग्रंथ का प्रकाशन किया है। गुजराती एवं हिन्दी इन दोनों अति प्रचलित भाषाओं में ग्रंथ का प्रकाशन कर उन्होंने सराहनीय प्रयास किया है। उनके इस प्रयास से संपूर्ण विश्व में कहीं भी रहने वाले साधर्मिक भाई-बहन इस ग्रंथ का पूरा-पूरा लाभ उठा सकेंगे।

बहुमूल्य एवं हृदयंगम प्राचीनतापूर्ण रंगीन चित्रों का संकलन करके जैन चित्रकला का अजोड़ नमूना उपस्थापित किया गया है। सभी चित्र कथा प्रसंगों से संबंधित एवं हृदय में आह्लाद उत्पन्न करने वाले हैं। इस प्रकाशन में जिस कागज का उपयोग किया गया है वह दीर्घायु है तथा छपाई भी बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है।

श्रावकश्रेष्ठ माननीय श्री प्रेमलभाई कापडिया ने प्रस्तुत पावन एवं पवित्र ग्रंथ को उपयोगी सामग्री एवं चित्रों के साथ प्रकाशित कर जैनजगत गगन में एक देदीप्यमान नक्षत्र की भाँति प्रस्थापित कर दिया है। संपूर्ण जैन समाज को गौरवान्वित करने वाला यह प्रकाशन साधकों, संशोधकों, जिज्ञासुओं, ज्ञानियों, सामान्य वाचकों के लिये या यौं कहें कि संपूर्ण मानवजाति के लिये उपयोगी है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यौं तो देवचंद्र चौबीसी में जैनधर्म-दर्शन का सार समाहित है ही साथ ही श्री कापडियाजी ने इस प्रकाशन में जैनशासन के समस्त विधाओं को समाविष्ट कर हर प्रकार के वाचकों का पूरा-पूरा ध्यान रखा है। इस ग्रंथ का अवलोकन मात्र ही कर्मनिर्जरा का कारण बन सकता है, तथापि वांचन-मनन से तो जीव अपना मानव जीवन सफल बनाने में सक्षम अवश्य ही होगा।

प्रस्तुत प्रकाशन के संपादन एवं प्रकाशन में आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर, कोबा, गांधीनगर की ओर से अनेक हस्तप्रतों एवं सम्राट संप्रति संग्रहालय से अधिकांश चित्र उपलब्ध करवाकर उल्लेखनीय योगदान दिया गया है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर, कोबा श्री कापडियाजी के इस कार्य की अनुमोदना के साथ अनेकशः धन्यवाद ज्ञापित करता है।

श्री प्रेमलभाई कापडिया ने इसके अतिरिक्त श्रीपाल रास, पंचसूत्र आदि अनेक ग्रंथों को सुसंपादित कर प्रकाशित किया है। उन्होंने अनेक ग्रंथों को प्रकाशित कर जिनशासन के उन्नयन में अद्वितीय उपहार प्रदान किया है। प्रभु जिनदेव से प्रार्थना है कि श्री कापडियाजी भविष्य में भी इसी प्रकार और उपयोगी ग्रंथों का संपादन एवं प्रकाशन करके समाज की सेवा करते रहें। उन्हें कोटिशः धन्यवाद..

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

राष्ट्रसंत पूज्यश्री की पावन निश्रा में अहमदाबाद - मीराम्बिका से श्री शंखेश्वर महातीर्थ की छ'री पालित संघयात्रा सानंद संपन्न

राजनगर-मिरांबिका, सागर उत्सव समिति द्वारा राष्ट्रसंत पूज्यप्रवर आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा तथा पूज्य आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरिजी, पूज्य आचार्य श्री विवेकसागरसूरिजी म.सा., पू. पूज्य गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की पावन निश्रा में छ'री पालित यात्रा संघ का प्रयाण हुआ। पूज्य आचार्य श्री हेमचंद्रसागरसूरिजी महाराज साहेब की प्रेरणा से श्री ऋषभदेव श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ द्वारा मिराम्बिका-नारणपुरा, अहमदाबाद से दि. 23-02-2022 को सर्वप्रथम बार कलिकाल कल्पद्रुम प्रगटप्रभावी पुरुषादानीय श्री शंखेश्वरजी महातीर्थ की छ'री पालित पदयात्रा निकली, जो 5 मार्च को शंखेश्वर महातीर्थ में मंगल प्रवेश कर पूर्णता को प्राप्त हुई। लाभार्थी संघपति परिवारों को संघमाल चौमुख परमात्मा के समक्ष गुरुदेवश्री के सानिध्य में आरोहण विधान करवाया गया।

इस पावनकारी संघयात्रा हेतु 300 यात्रियों के फोर्म आये थे किन्तु उसमें 200 फोर्म को पसंद किया गया। सभी यात्रियों ने खूब ही सुंदररूप से छ नियमों का पालन करते हुए श्रीशंखेश्वरतीर्थ की यात्रा पूर्ण की। यात्रा दौरान 40 जितने यात्रिओं ने अंतिम तीन दिन अट्ठम तप की आराधना के साथ यात्रा पूर्ण की। विशेष इस यात्रा में एक यात्रि ने 91वी आयंबिल तप की ओली तथा दूसरे यात्रि ने 68वी आयंबिल तप की ओली के साथ यात्रा पूर्ण की। संघ में 15 वर्ष से कम उम्रवाले छोटे बच्चों ने भी एकासणा-बियासणा के साथ यात्रा पूरी की। कई यात्रियों ने देरासर, कार्यालय तथा साधु-साध्वी भगवंतों की सेवा का लाभ लिया।

संघयात्रा की विशिष्टता- राष्ट्रसंत पूज्यश्री आदि श्रमण-श्रमणी भगवंतों के सानिध्य में हाथी, घोड़ा, शहनाई वादन, बेन्ड-बाजा, उंटगाडी तथा परमात्मा के रथ के साथ हर्षोल्लास से श्रावक-श्राविकाओं ने भव्यातिभव्य संघ प्रयाण, श्रीसंघ में वाराही के शांतिनाथ दादा की अद्भुत प्रतिमा, यात्रियों के द्वारा प्रभु की आंगी, सुप्रसिद्ध संगीतकारों के द्वारा नित्य प्रभुभक्ति, नित्य साधु भगवंतों के द्वारा प्रवचन धारा तथा फूल, रंगोली एवं संगीत आदि के साथ पार्श्वनाथ भगवान का वधामणां एवं श्री शंखेश्वरतीर्थ में भव्यातिभव्य संघप्रवेश कर 2.5 वर्ष के बाद तीर्थ में संघमाल प्रसंग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किया गया। इस पुण्यप्रभावी यात्रा में अनेक श्रद्धालुभक्त सम्मिलित हुए।

श्री मधुपुरी(महुडी) तीर्थ मध्ये त्रिदिवसीय महोत्सव पारणा सह भागवती दीक्षा संयम ग्रहण उत्सव सानंद संपन्न

तपागच्छाधिपति पूज्य आचार्यदेव श्री मनोहरकीर्तिसागरसूरीश्वरजी महाराजा एवं राष्ट्रसंत पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा सूरि-पदस्थ व अनेक साधु-साध्वी भगवंत की पावन निश्रा में मुमुक्षु कशीषकुमारी एवं मुमुक्षु अस्मिताकुमारी की भव्यातिभव्य दीक्षा सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर त्रिदिवसीय महोत्सव अन्तर्गत तीर्थ परिसर में दि. 15 फरवरी 2022 को दोनों गुरुभगवंतों का भव्य प्रवेश तथा श्री सिद्धचक्र महापूजन, विरतिधर वस्त्ररंग, वर्धापन किया गया। दि. 16 फरवरी 2022 को तपाराधिका पूज्य साध्वीजी भगवंत श्री संयमरत्नाश्रीजी म.सा. की वर्धमानतप की 100वी ओली का पारणा व तपवंदना का मंगल कार्यक्रम हुआ। प्रीतिदान - शोभायात्रा (वरसीदान वरघोडा), संयमी के हाथों से संयम प्रसादी (बेठुं वरसीदान), अणाहारीपद के यात्री (मुमुक्षु) का अंतिम वायणां, जिनालय में महापूजा, अंतिम विजय तिलक व सम्मान समारोह आदि का आयोजन हुआ। दि. 17 फरवरी 2022 को चतुर्विध संघ की विशाल उपस्थिति में दीक्षा विधि की गई तथा दीक्षान्ते नूतन दीक्षित दोनों साध्वीजी भगवंतों का नामकरण क्रियांशुरत्नाश्रीजी एवं अवधिधराश्रीजी किया गया। दोपहर - जिनालय में महिला मंडल द्वारा श्री पंचकल्याणक पूजा का आयोजन हुआ। सम्पूर्ण आयोजन का लाभ दोनों ही दीक्षार्थी के सांसारिक परिवार- गुरुभक्त तथा महुडी संघ- ट्रस्टमंडल द्वारा लिया गया।

प.पू. राष्ट्रसंतश्री तथा त्रिस्तुतिक जैन संघ के आचार्यों का शंखेश्वरमहातीर्थ में स्नेह मिलन

आचार्यदेव श्रीजयानंदसूरीश्वरजी महाराज के पावन सान्निध्य में चल रहे उपधान तप की आराधना के दौरान दि. 8 मार्च 2022 को राष्ट्रसंत पूज्यपाद आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा को सादर आमंत्रित किया गया, पूज्य राष्ट्रसंतश्रीजी ने सभी तपस्वी एवं उपस्थित श्रद्धालुओं को हितशिक्षा एवं आशीर्वचन प्रदान किया।

(अनुसंधान पेज नं २० पर)

For Private and Personal Use Only

राजनगर-मीराम्बिका अहमदाबाद से शंखेश्वर तीर्थ के छ'री पालित संघ की झाँकी

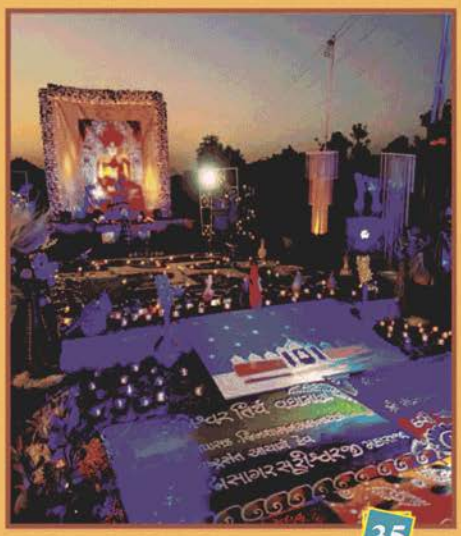

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Registered Under RNI Regestration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Koba so, and on 20th data
of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2024.

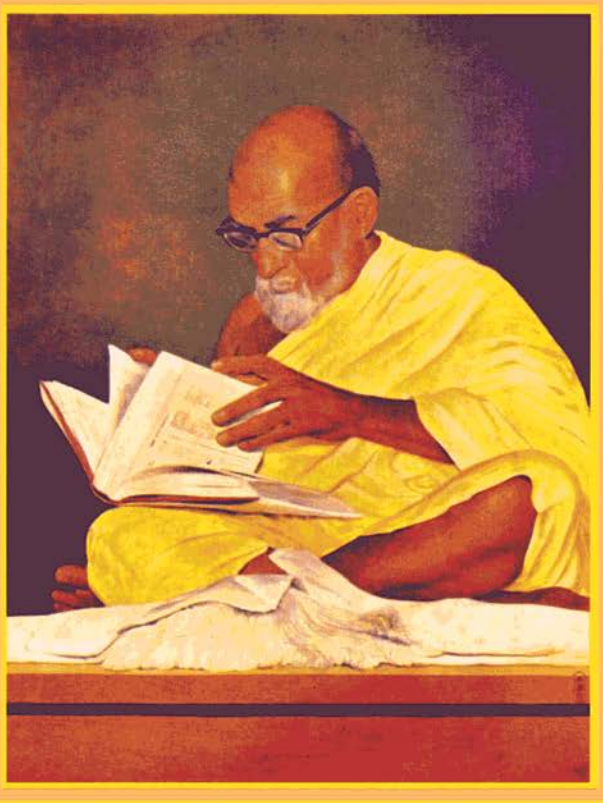

आगमप्रभाकर पू. मुनि श्री पुण्यविजयजी म. सा. (विवरण हेतु देखें पत्रांक-२६)

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. ७५७५००१०८१, ७५७५००१०८२
७५७५००१०८४, ७५७५००१०८५
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat.
And **Printed at :** NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. **Editor :** HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only